55वाँ

समय के साखी

प्रगतिशील साहित्यिक पत्रिका

परामर्श
राजेश जोशी
रामप्रकाश त्रिपाठी
सेवाराम त्रिपाठी

आवरण, कैलीग्राफी और रेखाचित्र
मनोज कुलकर्णी

संपादक
आरती

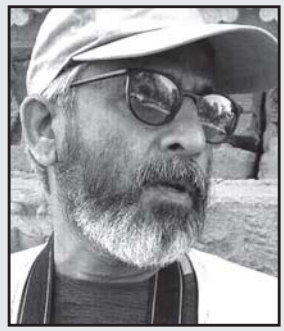

हमारे समय के महत्वपूर्ण चित्रकार मनोज कुलकर्णी कहानीकार और संस्कृति-कर्मी भी हैं। आपके चित्रों की प्रदर्शनी देश के प्रमुख आर्ट गैलरियों में प्रदर्शित हुई है। अनेक शहरों, कस्बों, गाँवों में सामयिक मुद्दों पर केंद्रित चित्रों की नुक्कड़ नुमाइशें। कई कला-शिविरों में हिस्सेदारी। हाशिये के समुदायों के बच्चों और स्त्रियों के लिए कला, पोस्टर कार्यशालाओं का संचालन।

कला-पत्र 'तूलिका-संवाद' के अलावा 'नयापथ' के चित्रकला विशेषांक का संपादन। कहानी संग्रह 'औघड़ समय' और भारत के जन विज्ञान आंदोलन पर एक पुस्तक प्रकाशित। साथ ही 'महिलाओं के मुद्दे : क्लारा जेटकिन', 'पर्यावरण-भारतीय परंपराएं और 'पुनराविष्कार' (माधव गाड़गिल) आदि पुस्तकों का अनुवाद।

मनोज कुलकर्णी जनवादी लेखक संघ और वामपंथी सांस्कृतिक-सामाजिक आंदोलन से जुड़े हुए हैं। चित्रकला और लेखन के साथ ही आप बेहतरीन फोटोग्राफर भी हैं।

संपर्क- एफ-1 साईधन अपार्टमेंट, विंग-बी, ई- 8/60 त्रिलंगा, भोपाल (म.प्र.) 462039

मोबाइल- 9424407846, ई-मेल - manoj4165@gmail.com

समय के साखी
जनवरी-मार्च 2025

UPI - 9713035330
(फोनपे, पेटीएम, गूगलपे)

******5330

यह अंक Notnull.com पर उपलब्ध है।

यह अंक : 200/- (डाक खर्च सहित)

सदस्यता

आजीवन : 5000/- (व्यक्तिगत)
: 8000/- (संस्थाओं के लिए)
एक साल : 700/- मात्र
दो साल : 1400/- मात्र
संस्थाओं के लिए यह अंक 250/- (डाक खर्च सहित)

समस्त भुगतान 'समय के साखी' के नाम स्वीकार्य होंगे। खाता क्रं. 451702011003868, IFSC Code UBINO545171 'समय के साखी' नामे, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, शाखा-अरेरा कॉलोनी, भोपाल में जमा कर सकते हैं।

संपादकीय कार्यालय :
912, अन्नपूर्णा परिसर, पीएण्डटी चौराहा के पास,
भोपाल (म.प्र.) 462003
मो. - 9713035330
Email : samaysakhi@gmail.com
Website - www.samaykesakhi.in

आकल्पन : गणेश ग्राफिक्स, भोपाल

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी आरती द्वारा गणेश ग्राफ़िक्स, देशबंधु भवन, प्रथमतल, 26 बी, प्रेस काम्प्लेक्स, एम. पी. नगर जोन-1 , भोपाल से मुद्रित कराकर 912, अन्नपूर्णा कॉम्पलेक्स, पी.एण्ड.टी चौराहा के पास, भोपाल-3 (म.प्र.) से प्रकाशित।

नोट : किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र, भोपाल (म.प्र.) होगा।
सर्वाधिकार सुरक्षित - संपादक/प्रकाशक

क्रम

मेरे शब्द - **एक अपील है...** 04

हस्तक्षेप : **सुहेल हाशमी:** भाषा की यात्रा मानव सभ्यता की यात्रा है 07

बातचीत : **गणेश नारायण देवी :** साहस ही साहित्य का प्राथमिक गुण है 13

धरोहर : **नामवर सिंह:** गद्य का उल्टा काव्य नहीं बल्कि पद्य है 23

कविताएँ 37

पूनम वासम की सात कविताएँ 37

केतन यादव की चार कविताएँ 43

अजय दुर्ज्ञेय की पाँच कविताएँ 46

माया मिश्रा की पाँच कविताएँ 49

सीमा सिंह की चार कविताएँ 52

बच्चा लाल 'उन्मेष' की पाँच कविताएँ 55

मृदुला सिंह की पाँच कविताएँ 68

संदीप कुमार की पाँच कविताएँ 62

अभिषेक वर्मा की छः ग़ज़लें 65

कहानियाँ 67

सविता पाठक, वैभव सिंह

हरि भटनागर, प्रज्वल चतुर्वेदी

कवि का गद्य - **नीलेश रघुवंशी :** निर्ममता की पाठशाला 100

कविताएँ 105

बहादुर पटेल की पाँच कविताएँ, **मणि मोहन** की नौ कविताएँ, **रमेश प्रजापति** की पाँच कविताएँ

सिनेमा पर - फ़रीद ख़ाँ: हम बनाते हैं एनीमल, वे बनाते हैं बार्बी, 114

अनुवाद-यादवेन्द्र : अरुणाचली कवि **गुमलत ओंग मायो** और मिजो कवि **मालसोमि जैकब** की कविता 121

समीक्षाएँ 123

वीरेंद्र यादव की किताब- 'विमर्श और व्यक्तित्व' पर **वीरेंद्र प्रताप** 123

सुभाष राय की किताब - 'दिगंबर विद्रोहिणी-अक्क महादेवी' पर **श्रीप्रकाश शुक्ल** 128

सुखदेव सिंह की किताब - 'पंजाबी कविता की प्रतिरोधी परंपरा' पर **स्वाती** 134

विहाग वैभव की किताब - 'मोर्चे पर विदागीत' पर **शिवेन्द्र कुमार मौर्य** 138

आशीष त्रिपाठी की किताब - 'शान्ति पर्व' पर **कार्तिक राय** 145

मर्लिन मुनरो का आख़िरी पत्र 151

एक अपील है...

कविता विशेषांक के बाद यानी पूरे एक साल छ: महीने बाद 'समय के साखी' का यह अंक आ सका।

मेरे पास समय की कमी नहीं है। लेखकीय सामग्री की भी नहीं। कई योजनाएँ हैं, जिन्हें पूरा करना चाहती हूँ। फिर क्यों इतना समय लगा?
मुझे लगता है इसका उत्तर सबको पता है। ऊपर कही गई बातें किसी एक पत्रिका को लेकर के नहीं हैं। लगभग सभी लघु पत्रिकाओं, अनियमित कालीन पत्रिकाओं की यही स्थिति है, जिनके काम न कर पाने का सबसे बड़ा कारण आर्थिक संसाधनों का अभाव है।

जब हम संसाधनों की बात कर रहे हैं, तभी इस रुकावट को और चौड़ा करती घटना घट चुकी है- भारतीय डाक विभाग के द्वारा प्रिंटेड सामग्री को जो थोड़ी सी छूट दी जाती थी, वह भी बंद कर दी गई। अब डाकखर्च की बढ़त भी पत्रिकाओं के सर पर गीले आटे में पानी की एक और धार की तरह पड़ेगी ।
इस विषय पर 'पक्षधर' के संपादक, आलोचक विनोद तिवारी जी ने संपादकीय के रूप में प्रधानमंत्री को एक जरूरी पत्र लिखा है। इस संदर्भ में 'बनास जन' के संपादक पल्लव ने भी अपनी चिंताएँ ज़ाहिर की हैं। जो बेशक हम सब की चिंताएं हैं, इसलिए उन दोहरावों को छोड़ती हूँ।

किसी भी अंक पर काम करते हुए ऐसा महसूस होता है कि साहित्य, समाज और दुनिया के लिए हम कुछ जरूरी और मूल्यवान कर रहे हैं। भले ही यह भ्रम ही हो। हमारे आज के काम का मूल्यांकन कल क्या होगा और उसकी क्या भूमिका होगी- इस बारे में हम केवल अनुमान लगा सकते हैं, प्रयास कर सकते हैं, कोई निष्कर्ष